आध्यात्मिक कामनाएँ या आध्यात्मिक क्षेत्र की माँगे बहुत प्रकार की होती है। जैसे -
सामीप्य मुक्ति - मैं हमेशा भगवान के साथ रहना चाहता हूँ।
साष्टि मुक्ति - मैं भगवान का ऐश्वर्य चाहता हूँ। सारूप्य मुक्ति - मैं भगवान की तरह दिखना चाहता हूँ।
सालोक्य मुक्ति - मैं हमेशा भगवान के निवास में रहना चाहता हूँ।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

सायुज्य मुक्ति - मैं भगवान के साथ एकता चाहता हूँ।

ये पांच प्रकार के मुक्ति हैं, जो अनंत क्षेत्र में स्थित हैं। इनमें से एक जो भगवान में आत्मा को विलीन करती है वह ईश्वर के साथ एकता की इच्छा है। यह सबसे खतरनाक है। इसे एकत्व मुक्ति या अद्वैत मुक्ति या कैवल्य मुक्ति या मोक्ष भी कहते है। यह निर्गुण, निराकार, बिना किसी रूप के भगवान के अनुयायियों का गंतव्य है। जैसा कि पहले की बताया गया है सायुज्य मुक्ति में केवल आत्मा रहती है। इस स्थिती में मन मृतप्राय स्थिती में रहता है। आत्मा को दिव्य शरीर नही मिलता जैसे भक्तों को मिलता है। मोक्ष में कोई भी रूप नहीं हो सकता, इसलिए किसी भी इंद्रियों का कोई भी काम नहीं हो सकता और इसलिए भगवान को नहीं देखा जा सकता, नही सुना नहीं जा सकता, नही स्पर्श किया जा सकता। सिर्फ अनंत खुशी का एहसास होता है। आत्मा का भगवान में विलय हो जाता है लेकिन दो व्यक्तित्व अभी भी मौजूद हैं, एक आत्मा और एक भगवान। आत्मा, हालांकि भगवान के भीतर लीन रहता है लेकिन भगवान से अलग रहता है। भगवान नहीं बनता जाता। आत्मा और भगवान का एकत्व अनंत आनंद के उपभोग के दृष्टि से माना गया है। आत्मा अपनी सत्ता

नही खो देता। गीता का चैलेंज है कि किसी भी सत्ता का कभी अभाव नही हो सकता। एक बार मिल जाने पर यह स्थिती आत्मा के पास हमेशा के लिए रहती है। उस मामले के लिए अनंत क्षेत्र में कोई उपलब्धि हमेशा हमेशा के लिए है। वो सुख कभी छीना नही जा सकता है, ना ही उसके ऊपर कभी दुःख का अधिकार हो सकता है।

शेष चार मुक्ति या मोक्ष भक्तों से संबंधित हैं। वे भगवान के साथ विलय से काफी बेहतर हैं। हालांकि, ये सभी मुक्ति अपनी सुख के लिए होती है ना कि भगवान के सुख के लिए। इनमें भगवान के साथ प्यार का संबंध नही है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

आध्यात्मिक कामना में अपने सुख के लिए श्रीकृष्ण के स्पर्श आदि जैसे दिव्य विषय की मांग भी शामिल है। जिस प्रकार कोई स्त्री अपने विषय भोग के लिए किसी पुरूष का संग चाहती है, उसी प्रकार सकाम प्रेमिका अपने विषय भोग के लिए भगवान का संग चाहती है।

इसका मतलब यह नहीं है कि श्रीकृष्ण को देखने के लिए किसी भी इच्छा नहीं होनी चाहिए। उनसे मिलने की, उनको गले लगाने की इच्छा तो होनी ही चाहिए। इस तरह के लालसा के बिना कोई प्यार नहीं है।

तो? इन सभी इच्छाओं को इस बात के साथ मिलकर किया जाता है कि इन सभी कार्यों से श्रीकृष्ण को खुश करना है। निष्काम भक्त भी उनके दर्शन चाहता है, लेकिन कब? जब भगवान को दर्शन देने में सुख मिले। भक्त महसूस करता है, 'मैं चाहता हूं कि कृष्ण मेरे साथ

रहें, अगर वह ऐसा करने में खुश है तो। अगर उन्हे ऐतराज है, तो वो ना आए। मैं अनंत काल तक उनका इंतजार करूंगा। मेरा प्यार हमेशा बढ़ेगा। '

इस प्रकार प्यार किसी भी सांसारिक या आध्यात्मिक कामना या मांग से मुक्त होना चाहिए। केवल भगवान के सुख की कामना ही मन में रहनी चाहिए। आध्यात्मिक दुनिया में कई गंतव्य हैं जिनमें से कुछ पर आगे चर्चा की जाएगी।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132